द्वितीय भारतीय भाषा (Second Indian Language)

इस खंड में चार भाषाएँ सम्मिलित की गई हैं – संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, बांगला। इस खंड की भाषाओं को संस्कृत/हिन्दी द्वितीय/उर्दू द्वितीय नाम से संबोधित किया गया है । इस खंड से भी किसी एक भाषा का चयन अनिवार्य होगा। परन्तु खंड 1 में जिस भाषा का चयन मातृभाषा के रूप में किया गया है उस भाषा का इस खंड से चयन नहीं किया जा सकेगा। जिन शिक्षार्थियों की मातृभाषा हिन्दी नहीं होगी उन्हें इस खंड से हिन्दी द्वितीय लेना अनिवार्य होगा। यह पत्र भी 100 अंकों का होगा और उत्तीर्णांक 30 अंक होंगे।

तत्काल हिन्दी एवं संस्कृत के पाठ्यक्रम इस खंड में सम्मिलित हैं। उर्दू (द्वितीय) एवं बांगला (द्वितीय) के लिए वर्ग VII एवं VIII के पाठ्यक्रम क्रमशः वर्ग IX एवं X में लागू होंगे।

2.1 संस्कृत

1. प्रस्तावना

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। विश्व का सर्वाधिक प्राचीन साहित्य ऋग्वेद भी संस्कृत भाषा में ही है। चारों वेद, वेदांग, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र जैसे गौरवशाली ग्रंथों की अविच्छिन्न, सुनियोजित शृंखला इसी भाषा में है। इस भाषा में गणित, रसायन, भौतिकी, चिकित्सा विज्ञान, संगीत एवं नृत्य विधा जैसे वैज्ञानिक ज्ञानों के साथ–साथ साहित्य की विविध विधाओं नाटक, गद्य–पद्य लेखन आदि के बीज देखे जा सकते हैं। भारत एवं अधिकांश यूरोपीय भाषाओं की जननी संस्कृत सृष्टि के आदिकाल से ही अपने ज्ञान–विज्ञानमयी श्रोतों से मानव–सभ्यता को अनुप्राणित करती आ रही है।

आज का विश्व विकास के यान पर सवार होकर भी अशांति, अवसाद एवं आतंक के साये में जी रहा है। संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों में निहित पर्यावरण के संतुलन का पाठ, नैतिक शिक्षा, नारी–सम्मान की अवधारणा, सर्वधर्मसमन्वय की उन्नत भावना जैसे जीवनोपयोगी तत्त्व मानव को इनसे मुक्ति दिला सकते हैं। कई भाषाओं की जननी होने के कारण इस भाषा के अध्ययन के परवर्त्ती भाषाओं का कोष बढ़ता है तथा भाषागत एवं साहित्यगत संतुलन व संवर्द्धन भी हो सकता है। आज यज्ञों की वैज्ञानिकता प्रमाणित है। इन यज्ञों के शुद्ध एवं सम्यक् संचालन हेतु संस्कृत–शिक्षण अनिवार्य है। इसी प्रकार योग, वास्तु, चिकित्सा जैसे अनेक विषयों को वैज्ञानिक और सबल बनाने के लिए भी संस्कृत–शिक्षण अनिवार्य है।

जीवनदायिनी इस संस्कृत भाषा में भी जीविका की असीम संभावनाएँ हैं। आज तो पश्चिम के चतुर लोगों द्वारा इस भाषा के अनेक गूढ़ तत्त्व 'अपहृत' किए जा रहे हैं। वास्तुविद्या, योग, चिकित्सा के सूक्ष्म तत्त्व, पर्यावरण–संरक्षण, पशु–धन संरक्षण जैसी अनेक विद्याएँ जीविका की अपार संभावनाओं के द्वार खोल सकती हैं। औषध–निर्माण के क्षेत्र में भी संस्कृत भाषा में निबद्ध 'भाव प्रकाश' जैसी रचनाओं का

Scanned with CamScanner

अध्ययन रोजगार की नयी संभावनाओं के द्वार खोलता है। यज्ञ, पूजन की प्रासंगिकता भी वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से सिद्ध है। इसी प्रकार प्राचीन संस्कृत के चिकित्सा–ग्रंथों के आधार पर औषधीय पौधों की खेती कर आर्थिक सम्पन्नता एवं रोजगार पैदा किए जा सकते हैं। इस प्रकार इस भाषा के सांगोपांग अध्ययन से धर्म–अर्थ–काम और मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है।

संस्कृत की अपार शब्दनिधि विश्व में अनुपम उदाहरण है। संस्कृत के एक धातु से डेढ़ लाख शब्द व्युत्पन्न होते हैं जबकि कुछ प्रसिद्ध भाषाओं में भी इतने शब्द नहीं मिलते। इस भाषा की शब्द–व्युत्पादन की वैज्ञानिक विधि द्वारा शब्द या पद के सूक्ष्मतम स्वरूप तक पहुँच सकते हैं। किसी भी भाषा के कौशल हेतु श्रवण, वाचन, लेखन एवं भाषण–दक्षता को विकसित करना आवश्यक है। प्राचीन मनीषियों ने इसी पक्ष को दृष्टिगत कर वेदांग साहित्य–शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द एवं ज्योतिष का विधान किया है। बाद में आचार्य पाणिनि ने संस्कृत व्याकरण को एक संतुलित एवं पूर्ण कलेवर प्रदान कर इस भाषा को पूर्णतः वैज्ञानिक बना दिया । विश्व की भाषाओं में यह प्रथम प्रयास था । नए शोधों से यह बात भी प्रमाणित हो गयी है कि आधुनिकता की नींव मानी जाने वाली कम्प्यूटर प्रणाली के लिए भी संस्कृत भाषा सर्वाधिक उपयुक्त है। संस्कृत के विभिन्न आयुर्वेद ग्रन्थों चरक संहिता, सुश्रुत संहिता तथा उपनिषद् जैसे अनेकानेक संस्कृत ग्रंन्थों पर निरंतर जारी शोधों से इस भाषा की वैज्ञानिकता ही तो प्रमाणित होती है।

बिहार का अतीत संस्कृत के समृद्ध एवं सुनहले दिनों से पूर्ण रहा है। याज्ञवल्क्य, जनक जैसे आत्मद्रष्टा ज्ञानी, बराहमिहिर, आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ व खगोल विज्ञानी, भारती–मण्डन जैसे प्रगल्भ दार्शनिक, चाणक्य जैसे राजनीतिज्ञ, पतंजलि जैसे वैयाकरण, विद्यापति जैसे कवि इस माटी में संस्कृत की सोंधी सुगंध बिखेरते नजर आते हैं।

इस भाषा के अध्ययन से वर्त्तमान चुनौतियों से लड़ने में मदद मिलती है। पर्यावरण संरक्षण, लिंग–भेद की विषमता दलित चेतना को जाग्रत करने की प्रेरणा, कर्म के आधार पर समाज की संरचना तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से शांति एवं सद्भाव की प्रेरणा इस भाषा के अध्ययन से मिलती है।

माध्यमिक IX-X

उद्देश्य :

- संस्कृत साहित्य के प्रति शिक्षार्थियों में अभिरुचि उत्पन्न करना।
- संस्कृत साहित्य की प्राचीन प्रतिनिधि रचनाओं एवं उनके रचनाकारों से विद्यार्थियों का परिचय कराना।
- शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करना।
- संस्कृत वाक्य–रचना में उन्हें निपुण बनाना।

Scanned with CamScanner

- सामाजिक बुराइयों के निवारण हेतु किशोरावस्था के शिक्षार्थियों के लिए लघु नाटक, संवाद पर आधारित ज्ञान कराना।
- पर्यावरण एवं मानव मूल्यों के प्रति सजगता उत्पन्न करना।
- सामाजिक शांति के प्रति जागृति का भाव उत्पन्न करना।
- अनुच्छेद–लेखन की क्षमता का विकास करना।
- संस्कृत के गद्यांशों, पद्यों एवं नाट्यांशों के भावार्थ समझाते हुए उनका सुस्पष्ट एवं शुद्ध पाठ करना।
- सहपाठियों तथा शिक्षकों से वार्त्तालाप करना।
- संस्कृत के पठित पद्यों तथा वाक्यों को सुनकर उन्हें शुद्ध वर्त्तनी में लिखने की क्षमता का विकास करना।
- पठित विषय पर सरल संस्कृत वाक्यों में अपना भाव अभिव्यक्त करना।
- किसी कहानी अथवा निबन्ध को पढ़कर उचित शीर्षक प्रस्तुत करना।
- औषधीय पौधों की पहचान एवं उनके उपयोग के साथ–साथ उनकी खेती को बढ़ावा देना ।
- आयुर्वेद का विकास करना।
- संस्कृत साहित्य के अन्तर्निहित इतिहास को उजागर करना।

3. परीक्षा का ढाँचा

इस वर्ग में निम्नांकित प्रकार से परीक्षाएँ ली जायेंगी :–

तालिका

सावधिक	कुल अंक	इकाई	कुल अंक
प्रथम सावधिक	100	प्रथम इकाई द्वितीय इकाई	50 50
द्वितीय सावधिक	100	प्रथम इकाई द्वितीय इकाई	50 50
वार्षिक	100	प्रथम इकाई द्वितीय इकाई	50 50

		आवंटित अंक	घंटियों का आवंटन
(क)	अपठित–अवबोधनम्	13	30
(ख)	रचनात्मक कार्य एवं परियोजना	15	30
(ग)	अनुप्रयुक्त व्याकरण एवं अनुवाद (मौखिक सहित)	25+7=32	50
(घ)	पठित–अवबोधनम्	40	70

Scanned with CamScanner

खण्ड 'क'–अपठित गद्यांश 13

1 150–200 शब्दों का एक साहित्यिक गद्यांश

इस गद्यांश के आधार पर प्रश्न पूछे जायेंगे। ये प्रश्न एक पद में उत्तर/एक पूर्ण वाक्य में उत्तर वाले हो सकते हैं। भाषिक प्रश्न यथा विशेष्य–विशेषण संबंध/कर्त्ता–क्रिया पहचान/विपर्यय–प्रर्याय शब्दों की पहचान/सर्वनाम प्रयोग/अव्यय पद की पहचान/विभक्ति की पहचान संबंधी प्रश्न दिये जा सकते हैं। गद्यांश के शीर्षक संबंधी प्रश्न भी हो सकते हैं। 15

खण्ड 'ख'–रचनात्मक कार्य एवं परियोजना 08

1. पत्र–लेखन – 07
2. चित्र–वर्णन/अनुच्छेद–लेखन – 32

खण्ड 'ग'–अनुप्रयुक्त व्याकरण व अनुवाद (मौखिक सहित)

1. शब्दरूप
2. धातुरूप
3. संधि/संयोग
4. उपसर्ग
5. प्रत्यय

} 25

6. अनुवाद मातृभाषा से संस्कृत में – 07

खण्ड 'घ'–पठित अवबोधनम् 40

गद्य – 15

पद्य – 15

नाटक – 10

1 दो में से किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी 2 प्रश्न – 04

2 गद्य पाठ पर आधारित 4 में से 3 बोधात्मक प्रश्न – 3+3+3=09

3 गद्य पाठों के विचार/संदेश से संबंधित एक लघु उत्तरात्मक प्रश्न – 02

4. किसी पाठित पद्य पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी 2 प्रश्न – 04

5 पद्य पाठों पर आधारित बोधात्मक प्रश्न – 3+3 = 06

6 पद्य पाठों के संदेश से संबंधित – 3+2 = 05

7 नाटक पाठों पर आधारित 3 में 2 बोधात्मक प्रश्न – 3+3 = 06

8 नाटक पाठों के संदेश से संबंधित 2 प्रश्न – 2+2 = 04

पाठ्यपुस्तक– राज्य शिक्षा–शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम प्रकाशित वर्ग IX की नयी संस्कृत पाठ्यपुस्तक ।

Scanned with CamScanner

कक्षा X

तालिका

परीक्षा का ढाँचा

इस वर्ग मे निम्नांकित प्रकार से परीक्षाएँ ली जाएँगी।

	कुल अंक	इकाई	कुल अंक
प्रथम सावधिक	100	प्रथम इकाई द्वितीय इकाई	50 50
द्वितीय सावधिक	100	प्रथम इकाई द्वितीय इकाई	50 50
सेण्टप परीक्षा	100		

		आवंटित अंक	घंटियों का आवंटन
(क)	अपठित–अवबोधनम्	13	30
(ख)	रचनात्मक	15	30
(ग)	अनुप्रयुक्त व्याकरण एवं अनुवाद	25+7=32	50
(घ)	पठित–अवबोधनम्	40	70

खण्ड 'क'–अपठित गद्यांश

1. **150–200 शब्दों का एक संस्कृत गद्यांश** 13

उपर्युक्त गद्यांशों पर आधारित शीर्षक चुनाव/विषय–वस्तु का बोध और भाषिक विशेषताओं यथा विशेष्य–विशेषण संबंध/कर्त्ता–क्रिया पहचान/पर्याय शब्दों की पहचान/विभक्ति की पहचान आदि पर अतिलघु / लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे।

खण्ड 'ख'–रचनात्मक कार्य 15

पत्र–लेखन/आवेदन–लेखन – 08

चित्र–वर्णन/अनुच्छेद–लेखन – 07

खण्ड 'ग'–अनुप्रयुक्त व्याकरण व अनुवाद – 32

1. शब्दरूप
2. धातुरूप
3. संधि/संयोग
4. उपसर्ग
5. प्रत्यय
6. समास
7. कारक एवं विभक्ति

} 25

Scanned with CamScanner

		07
8.	अनुवाद–मातृभाषा से संस्कृत में	40
खण्ड 'घ'–पठित अवबोधनम् –		15
	गद्य –	15
	पद्य –	10
	नाटक –	04
1.	दो में से किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी 2 प्रश्न –	3+3+3=09
2.	गद्य पाठों पर आधारित 4 में से 3 बोधात्मक प्रश्न –	02
3.	गद्य पाठो के विचार/संदेश से संबंधि एक लघु उत्तरात्मक प्रश्न –	04
4.	किसी पठित पद्य पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी 2 प्रश्न –	3+3= 06
5.	पद्य पाठों पर आधारित बोधात्मक प्रश्न –	3+2 = 05
6.	पद्य पाठों के संदेश से संबंधित –	3+3 = 06
7.	नाटक पाठों पर आधारित 3 में 2 बोधात्मक प्रश्न –	2+2 = 04
8.	नाटक पाठों के संदेश से संबंधित 2 प्रश्न –	

पाठ्य–पुस्तक– राज्य शिक्षा–शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग X की नयी संस्कृत पाठ्य–पुस्तक ।

4. पाठ्यक्रम

कक्षा	स्तरान्त योग्यताएँ				भाषिक तत्त्व क्षमता/तार्किक तत्त्व क्षमता	पाठ आधारित व्याकरण
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण		
IX	• संधियुक्त पदों को सुनकर अर्थ ग्रहण करना।	• गद्यांशों एवं पद्यांशों का शुद्ध एवं सुगमतापूर्वक वाचन। • पद्यों का भावपूर्ण वाचन।	• संधियुक्त पदों को सुनकर लेखन कार्य।	• सामयिक घटनाओं पर शुद्ध– शुद्ध 5 वाक्य सुनाना।	• संधि का उच्च ज्ञान। • अजन्त शब्द रूपों का ज्ञान। • महत्त्वपूर्ण धातु रूपों का लट् तथा लृट् एवं भूतकालिक 'क्त' एवं 'क्ववतु' प्रत्ययों का	• पाठ में प्रयुक्त संधि के विभिन्न पदों की पहचान करना। • पाठ में प्रयुक्त विभिन्न अजन्त शब्द रूपों की पहचान करना। • पाठ में प्रयुक्त क्रियापदों (लट्, लृट,

Scanned with CamScanner

					ज्ञान। • समास का सामान्य ज्ञान। • कारक के प्रमुख सूत्रों का ज्ञान, कर्त्ता, कर्म करण संज्ञा। • संख्यावाची शब्दों के साथ पूरण प्रत्ययों के प्रयोग का ज्ञान। • कृत् एवं तद्धित प्रत्यय का सामान्य ज्ञान। • हिन्दी के सरल उद्धारणों का संस्कृत में अनुवाद। • कल्पना–कौशल का विकास। • चित्र–आधारित संस्कृत प्रश्नोत्तर। • सामाजिक बुराइयों (विशेषकर किशोरावस्था से संबंधित) के निवारण का ज्ञान कराना।	लोट, लङ् और विधि लिङ्) की अलग–अलग पहचान करना (परस्मैपदी एवं आत्मनेपदी)। • पाठ में आये अव्ययीभाव एवं तत्पुरूष समासों की पहचान करना। • पाठ में आगे कर्त्ता, कर्म, एवं करण के कारकीय सूत्र–युक्त पदों की पहचान कराना। • पाठ में आए संख्यावाची पदों के साथ पूरण प्रत्ययों की पहचान। • पाठ में कृदन्त एवं तद्धितान्त का सामान्य ज्ञान।

Scanned with CamScanner

	• लघु समास–युक्त पदों का सुनकर अर्थग्रहण करना।	• समासयुक्त वाक्यों को शुद्ध–शुद्ध पढ़ना।	• समास –युक्त पदों एवं वाक्यों को सुनकर शुद्ध–शुद्ध लिखना।	• समास–युक्त पदों से युक्त संस्कृत में वाक्य बनाकर सुनाना।	• व्यंजन एवं विसर्ग संधि का ज्ञान। • वैज्ञानिक अभिरुचि एव कल्पना–कौशल का विकास। • कारक–सूत्रों यथा सम्प्रादान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण का ज्ञान। • समास का सामान्य ज्ञान। • उपसर्ग एवं प्रत्ययों का सामान्य ज्ञान। • स्त्रीप्रत्ययों का सामान्य ज्ञान। • चित्र पर आधारित संस्कृत वाक्य–रचना का ज्ञान। • महत्त्वपूर्ण अजन्त एवं हलन्त शब्द–रूपों का ज्ञान। • महत्त्वपूर्ण धातु रूपों का पाँचों लकारों में ज्ञान।	• पाठ में प्रयुक्त व्यंजन एवं विसर्ग सन्धियों की पहचान कर उनका सन्धि–विच्छेद करना। • प्रयुक्त वाक्यों का परस्पर कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में परिवर्त्तन करना। • पाठ में आये कारकीय सूत्रों से युक्त पदों की पहचान। • पाठ में प्रयुक्ता कर्मधारय, बहुव्रीही, द्वन्द्व, द्विगु एवं नञ् की पहचान। • पाठ में आये स्त्री प्रत्ययान्त पदों की पहचान। • पाठ में प्रयुक्त उपसर्ग पदों की उपसर्ग सहित पहचान।

Scanned with CamScanner

					• हिन्दी के अवतरणों का संस्कृत में अनुवाद का ज्ञान। • संस्कृत में प्रार्थना--पत्र लिखने का ज्ञान।	• अव्यय पदों की पहचान।
X	• संस्कृत पाठों को सुनकर एवं नाट्यांशों का अभिनय देखकर उनका रसास्वादन करना।	• संस्कृत नाट्यांशों का अभिनयपूर्व क वाचन।		• नाटकीय सम्वादों को अभिनयपूर्वक सुनाना।	• लघु निबंध का ज्ञान। • सामान्य पत्र–व्यवहार। • विभिन्न सन्धियों का ज्ञान। • उच्चारण–स्थल का ज्ञान। • शब्द रूप अजन्त (पु0, स्त्री, नपु0) रूपों का ज्ञान।	
					• सर्वनाम–तत्, यत्, एतत्, किम् की तीनों लिंगों तथा अस्मद्, युष्मद का ज्ञान। • संख्यावाची शब्द रूप–एक, द्वि, त्रि, चतुर्थ का तीनों लिंगों में ज्ञान।	

Scanned with CamScanner

शिक्षण–विधि एवं तकनीक

शिक्षण को सुगम, रोचक एवं शिक्षार्थी–केन्द्रित बनाने के लिए अध्यापक आवश्यकतानुसार प्रश्नोत्तर विधि को अपनाते हुए शिक्षार्थियों के परिवेश एवं उनकी मातृभाषा का संस्कृत–शिक्षण में संयोजन कर सकते हैं। आवश्यकतानुसार क्रियात्मक विधि का अधिकाधिक उपयोग कर भाषा–कौशल के विकास का प्रयास किया जाए। आपके द्वारा संस्कृत के श्लोकों का सस्वर पाठ करते हुए शिक्षार्थियों द्वारा अनुवाचन कराया जाय। संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों का मनोरंजनपूर्ण अभ्यास भी भाषा–कौशल के विकास में उपयोगी हो सकता है। अध्यापक, शिक्षार्थी को दो–चार गुटों में बाँटकर, पठित अंश के आधार पर वार्त्तालाप करवा सकते हैं।

विद्यालय / कक्षा क्रियाकलाप एवं टी० एल० एम०

- आवश्यक गतिविधियों का आयोजन
- अनुलेख / श्रुतलेख
- संस्कृत में गुरु / ईश–वंदना विषयक कम–से–कम दो श्लोकों का प्रयोग।
- कक्षा में प्रति माह श्लोकोच्चारण तथा श्लोक प्रतियोगिता का आयोजन ।
- संस्कृत सम्भाषण अभ्यास वर्ग का समायोजन।
- विद्यालय में क्षेत्रीय महापुरुषों की जन्म या पुण्य–तिथियों पर संस्कृत में विविध प्रतियोगिताओं का अथवा
- समसामयिक विषयों पर आधारित संस्कृत में वार्त्तालाप करवा सकते हैं।
- संस्कृत की रोचक कथाओं, नाटकों एवं अन्य समसामयिक संदर्भों पर निर्मित संस्कृत के कार्टून फिल्मों या वृत्तचित्रों को दिखलाना।

6. **संभावित परियोजना कार्य (कक्षावार) : कक्षा – IX**

1. संस्कृत भाषा में नीति वाक्यों का वाचन एवं संकलन
2. संधि तालिका का निर्माण
3. घड़ी का चित्र बनाकर समय–दिखाना (संस्कृत भाषा द्वारा)
4. अव्यय पदों का अर्थसहित लेखन तथा वाक्य–निर्माण।
5. पाँच, लकारों में (लट्, लृट्, लङ्, विधिलिङ) सेव्, नी–धातुओं का लेखन ।
6. लता, नदी, गौ – शब्दरूपों का वाचन एवं लेखन।
7. 1 से 100 तक संस्कृत संख्यावाची शब्दों का लेखन एवं वाचन ।
8. सामान्य तद्धित तथा कृदन्त प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों का संकलन।
9. वर्णों के उच्चारण–स्थालों को चित्र के माध्यम से प्रदर्शित करना।

Scanned with CamScanner

10. कर्त्ता, कर्म तथा करण – प्रत्येक कारकयुक्त 20.20 वाक्यों का निर्माण।

11. जल, वायु, वृक्ष, अग्नि, सूर्य, कृषि से संबद्ध दो–दो संस्कृत वाक्यों की रचना।

12. अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि के दुष्प्रभावों पर पाँच–पाँच संस्कृत वाक्यों की रचना।

कक्षा X

1. विभिन्न समस्त पदों का विग्रहपूर्वक संकलन।

2. व्यंजन तथा विसर्गसंधि तालिका का निर्माण।

3. सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण कारकों से प्रत्येक के माध्यम से 10.10 वाक्यों का निर्माण।

4. समय–निर्देश करते हुए अपने दैनिक कार्यक्रम का दस संस्कृत वाक्यों में वर्णन।

5. 50 अव्ययपदों का अर्थसहित संकलन तथा उनसे वाक्य–निर्माण।

6. पाठ्यपुस्तक में व्यवहृत किन्हीं 50 शब्दों को अकारादि क्रम से सजाना।

स्त्रांत अधिगम–क्षमता

- संस्कृत में नाट्य–कौशल का विकास (अभिनय–क्षमता सहित)
- पाठ्यांशों के संस्कृत में भावार्थ–लेखन कौशल का विकास ।
- अनुच्छेद लेखन एवं पत्र–लेखन का ज्ञान।
- संस्कृत शब्दकोष वर्धन।
- कृदन्त, तद्धित एवं स्त्री प्रत्यय का ज्ञान।
- समास का सामान्य ज्ञान।
- कारक एवं कारकीय सूत्रों का ज्ञान।

संस्कृत–शिक्षकों से अपेक्षाएँ :

- संस्कृत श्लोकों के सस्वरवाचन का ज्ञान।
- बहुभाषिकता का ज्ञान
- दृश्य, श्रव्य, यान्त्रिक माध्यमों के उपयोग करने की क्षमता।
- गेयता एवं अभिनेयता।
- संस्कृत व्याकरण का समुचित ज्ञान।
- संस्कृत सम्भाषण में कुशलता ।
- शिक्षार्थियों में संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने योग्य माहौल निर्माण की क्षमता ।

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा

कक्षा – X

1.	ईशस्तुतिः	–	गीता तथा उपनिषद् से पाँच पद्य
2.	लोभाविष्ट चक्रधर कथा	–	चित्रात्मक (पचतंत्र से सम्पादित अंश)
3.	यक्षयुधिष्ठिर संवादः	–	महाभारत क वनपर्व से दस पद्य
4.	चत्वारो वेदाः	–	निबन्ध (वेदों का सामान्य परिचय)
5.	वार्त्तालाप	–	संस्कृत कक्षा में शिक्षार्थियों तथा अध्यापक के बीच संस्कृत के महत्त्व पर संवाद।
6.	संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम्	–	निबन्ध (संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में पर्यावरण सम्बन्धी संक्षिप्त सूचनाएँ)
7.	ज्ञानं भारः क्रियांविना	–	पचतंत्र की सम्पादित कथा, चित्रात्मक
8.	नीतिपद्यानि	–	नीतिशतक से आठ सरल श्लोक
9.	विहारस्य सांस्कृतिकं वैभवम्	–	निबन्ध (बिहार की कलाओं का विशेष परिचय)
10.	ईदमहोत्सवः	–	निबन्ध, चित्रात्मक
11.	ग्राम्य जीवनम्	–	निबन्ध, चित्रात्मक (बिहार के गाँवों की समस्या तथा ग्रामवासियों का दैनिक जीवन)
12.	वीर कुँवर सिंहः	–	जीवनचरित तथा कार्य, चित्रात्मक
13.	किशोराणां मनोविज्ञानम्	–	निबन्ध (किशोरावस्था की महत्त्वकांक्षा तथा दिशा–निर्देश)
14.	लघुकथा	–	आधुनिक बोध से सम्बद्ध शिक्षाप्रद।
15.	वैशालीवर्णनम्	–	पद्य (नवरचित), वैशाली का महत्त्व, गणतंत्र–शासन की महिमा।

प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुप्रयुक्त व्याकरण, यथावश्यक योग्यता–विस्तार तथा पर्याप्त अभ्यास–प्रश्न दिये

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा

कक्षा X

1.	मङ्गलम्	–	उपनिषदों के पाँच पद्य
2.	पाटलिपुत्रवैभवम्	–	निबन्ध
3.	अलसकथा	–	विद्यापति की पुरुष–परीक्षा से सम्पादित, (मैथिली अकादमी संस्करण, पृष्ठ–54 एवं 56)
4.	संस्कृतसाहित्ये लेखिका	–	परिचयात्मक निबन्ध
5.	भारतमहिमा	–	पद्य (विष्णु पुराण, भागवतपुराण से संकलित तथा आधुनिक रचनाएँ सात पद्य)
6.	भारतीयसंस्काराः	–	निबन्ध (प्रमुख संस्कारों का परिचय तथा महत्त्व)
7.	शास्त्रकाराः	–	वार्त्तालापः (प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के लेखकों पर सूचनात्मक बातचीत)
8.	नीतिश्लोकाः	–	विदुरनीति से दस पद्य
9.	कर्मवीरकथा	–	आधुनिक गाँव के दलित व्यक्ति का पढ़–लिखकर ऊँचा स्थान पाना इस विषय पर कल्पित कथा
10.	स्वामी दयानन्दः	–	परिचय तथा उपलब्धियाँ, चित्रात्मक।
11.	मन्दाकिनीवर्णनम्	–	वाल्मीकीय रामायण के अयोध्याकाण्ड, सर्ग 95 का श्लोक 3 से 12 तक
12.	व्याघ्रपथिककथा	–	हितोपदेश से सम्पादित, चित्रात्मक
13.	कर्णस्य दानवीरता	–	चित्रात्मक (भास के कर्णभार नाटक से संकलित, चौखम्बा संस्करण में पृष्ठ–16 पर 'ततः प्रविशंति ब्राह्मणरूपेण शक्रः' से पृष्ठ–24 पर 'तस्मात् गृह्यताम्' तक, सम्पादित)
14.	विश्वशान्ति	–	निबन्ध

प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुप्रयुक्त व्याकरण, यथावश्यक योग्यता–विस्तार तथा पर्याप्त अभ्यास–प्रश्न दिये जायें।

Scanned with CamScanner